School of Social Sciences

Certificate

I here by declare that the short synopsis" **वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में हिन्द महासागर क्षेत्र की भू-सामरिक चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन(Vartmaan Bhartiya Paripreksha Mein Hind Mahasagar Kshetra Ki Bhu-samrik Chunaotiyon Ka Vishleshnatmak Adhyayan**)" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Political Science under school of Social Sciences of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Ananda Nand Tripathi and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

Arun

Arun Kumar
En. No.- 2200601

Research Supervisor

Dr. Ananda Nand Tripathi
Faculty of Political Science

21/7/25

Prof. Santosha Kumar
Director of School of Social Sciences

26/07/25

Prof. P.K. Pandey
Director, R&D Cell

वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में हिन्द महासागर क्षेत्र की भू-सामरिक चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Vartmaan Bhartiya Pariprekshya Mein Hind Mahasagar Kshetra Ki Bhu-samrik Chunaotiyon Ka Vishleshnatmak Adhyayan

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN POLITICAL SCIENCE
to
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

ARUN KUMAR
Enrolment no.- 2200601

Under the Supervision of

Dr. Ananda Nand Tripathi

Faculty of Political Science

School of Social Sciences

U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipurm,(Sector–F)Phaphamau,Prayagraj–211021

Arun

सारांश(Abstract)

इस शोध प्रस्ताव का उद्देश्य भारतीय महासागर क्षेत्र में भारत के सामने आने वाली भू-रणनीतिक चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। यह भारतीय महासागर के समुद्री क्षेत्र के महत्व पर प्रकाश डालता है और पारंपरिक और गैर-पारंपरिक दोनों तरह के खतरों का अध्ययन करता है। प्रस्ताव में भारत के रणनीतिक हितों, पड़ोसी देशों के साथ संबंधों, प्रमुख शक्तियों विशेष रूप से चीन द्वारा उत्पन्न चुनौतियों और क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका को रेखांकित किया गया है। यह इस क्षेत्र में भारत की उभरती भूमिका को समझने और इसकी समुद्री सुरक्षा और रणनीतिक उपस्थिति को मजबूत करने के लिए समाधान प्रस्तावित करने का प्रयास करता है।

हिंद महासागर क्षेत्र में लगातार विवाद बढ़ रहा है। परंपरागत सुरक्षा चुनौतियों में नौसैनिक प्रतिस्पर्धा और चीन का बढ़ता प्रभाव शामिल है - जिसे अक्सर "String of pearls" के रूप में वर्णित किया जाता है। जिसके तहत चीन ने दक्षिण चीन सागर से अरब सागर तक बंदरगाहों (जैसे ग्वादर, हंबनटोटा) और प्रमुख भू सामरिक स्थानों में निवेश किया है।

गैर-पारंपरिक खतरे भी प्रमुख हैं, सोमालिया और अरब सागर में समुद्री डकैती, समुद्री आतंकवाद (जैसे समुद्र के रास्ते 2008 का मुंबई हमला), तस्करी, मानव तस्करी और यहां तक कि पर्यावरणीय आपदाएं जैसे सुनामी, चक्रवात क्षेत्रीय सुरक्षा को खतरे में डालती हैं। भारत वर्तमान में इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन(IORA) का सदस्य है, जो 23 देशों का एक अंतर सरकारी संगठन है। जिसका उद्देश्य समुद्री सहयोग को आगे बढ़ाना है। यह अध्ययन भारतीय परिप्रेक्ष्य से हिंद महासागरीय क्षेत्र में भारत की उभरती भूमिका का मूल्यांकन करेगा। इसका उद्देश्य यह संश्लेषित करना है कि रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और सहयोग भारत के समुद्री वातावरण को कैसे आकार देते हैं और आवश्यक रणनीतियों का प्रस्ताव करना है।

Arun

Keywords :

- भू-रणनीतिक
- समुद्री आतंकवाद
- क्षेत्रीय संगठनों
- नौसैनिक प्रतिस्पर्धा
- समुद्री सुरक्षा
- String of pearls
- इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन(IORA)
- क्षेत्रीय सुरक्षा

Arun

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	2-7
3	Description Broad Area	7-8
4	Objectives of the Study	8-8
5	Research Methodology	8-11
6	Expected Outcome of the Research	11

References

Plagiarism Report

Arun

प्रस्तावना(Introduction)

यदि हम भारत की भौगोलिक स्थिति पर नजर डालें तो यह एक बड़े भौगोलिक विस्तार वाला प्रायद्वीपीय देश है। भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत है जबकि भारत का दक्षिणी भाग पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर एवं दक्षिण में हिंद महासागर से घिरा है। भारत की एक लम्बी तटीय सीमा है जिसकी कुल लम्बाई 7516.6 किलोमीटर है। जिसमें से भारतीय मुख्य भूमि का तटीय विस्तार 6300 किलोमीटर जबकि द्वीपीय क्षेत्र अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह व लक्षद्वीप समूह का संयुक्त तटीय विस्तार 1216.6 किलोमीटर है। भारतीय समुद्र तट पर कुल 9 राज्य व 4 केन्द्रशासित प्रदेश हैं। भारत का ज्यादातर व्यापार इन्हीं समुद्र तटीय राज्यों में स्थित बंदरगाहों से होता है। भारत का अधिकांश व्यापार हिंद महासागर से होता है, भारत के संसाधनों की भी एक बड़ी मात्रा हिंद महासागर से प्राप्त होती है।

भारत हिंद महासागर में केन्द्रीय स्थिति रखता है। हिंद महासागर के तटीय देशों की कुल जनसंख्या का 50 प्रतिशत से अधिक भारत में निवास करती है। हिंद महासागर एशिया, यूरोप व अफ्रीका तीनों महाद्वीपों को जोड़ता है। इसका अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, विशेषकर तेल व्यापार की दृष्टिकोण से विशेष महत्व है। भारत के भू-राजनीतिक, सामरिक, आर्थिक, व्यापारिक आदि अनेक हितों की पूर्ति हिंद महासागर से ही होती है। भारत के हिंद महासागर में लगभग 156 द्वीप है जिनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी भारत की है। हिंद महासागर के ज्यादातर तटवर्ती द्वीपीय देश, अपने प्रदेश की शांति, सामरिक परिस्थितियों व आर्थिक विकास हेतु काफी हद तक भारत पर निर्भर हैं। हिंद महासागर में सबसे बड़ा देश होने के नाते इस क्षेत्र में आर्थिक विकास व शांति को बनाए रखने की जिम्मेदारी भारत पर बहुत बढ़ जाती है।

अतः हिंद महासागर के व्यापक महत्व को देखते हुए इसे शांत क्षेत्र बनाए रखना भारत की प्राथमिकता है। इन्हीं सब कारणों से भारत हमेशा से हिंद महासागर में महाशक्तियों का विरोध करता आया है जिससे इस क्षेत्र को शांत बनाया जा सके और नौवहन

Arun

की स्वतंत्रता बनी रहे। यदि वर्तमान समय में देखा जाये तो अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का केंद्र उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र से हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में स्थापित हो गया है। अतः ऐसे में भारत की हिन्द महासागर में क्या भूमिका हो, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न निकलकर हमारे सामने आता है।

साहित्य समीक्षा(Literature Review)

1) 21वीं सदी के प्रथम दशक में हिन्द महासागर की राजनीती भारत और चीन के विशेष सन्दर्भ में ,भानु प्रताप रे(2023)

प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत हिन्द महासागर की भू-राजनीतिक एवं भू-सामरिक अवस्थिति को दर्शाते हुए शीतयुद्धोत्तर कालीन वैश्विक राजनीती में हिन्द महासागर की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही समय के साथ बदलते परिपेक्ष्य में हिन्द महासागर में भारतीय हितों को चिन्हित किया गया है और इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती गतिविधियों और उससे जुड़ी भारत की सुरक्षा चिंताओं को भी उजागर किया गया है। इसके अंतर्गत हिन्द महासागरीय क्षेत्र में शांति स्थापित करने के प्रयासों का भी उल्लेख है।

2) भारतीय रक्षा तथा विकास की दृष्टि से हिन्द महासगार का सैन्य वैज्ञानिक विश्लेषण ,शिव प्रकाश त्रिपाठी (2019)

प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत हिन्द महासागर की भू-राजनीतिक स्थिति को संदर्भित करते हुए इस क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र संघ के UNCLOS के क्रियान्वयन को दिखाया गया है और साथ ही हिन्द महासागरीय क्षेत्र में प्रतिद्वंदिता की समाप्ति हेतु किये गए अंतर्राष्ट्रीय एवं भारतीय प्रयासों को भी बताया गया है।

Arun

3) 21वीं सदी में भारतीय सुरक्षा और हिन्द महासागर ,मोनू कुशवाहा(2015)

प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत हिन्द महासागर की ऐतिहासिक पृष्ठ्भूमि, भू-राजनीतिक अवस्थिति और शक्ति पर्तिस्पर्धा पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही हिन्द महा साग रीय क्षेत्र में भारत की सुरक्षा की दृष्टि से हिमतक्षेस की भूमिका का भी वर्णन किया गया है।

4) हिन्द महासागर में शक्ति राजनीती के बदलते आयाम भारतीय सुरक्षा के विशेष परिप्रेक्ष में, बघेल राज बहादुर सिंह(2019)

प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत हिन्द महासागर की आर्थिक राजनीतिक भौगोलिक एवं भू-सामरिक महत्व को दिखाया गया हैं। इस क्षेत्र में महाशक्तियों की निहित हित और शक्ति प्रतिस्पर्धा को भी प्रदर्शित किया गया है। सोवियत संघ की विघटन के बाद हिन्द महासागर की राजनीतिक स्थिति को दर्शाया गया है। इस क्षेत्र में भारत के लिए संभवित खतरों और उनसे सम्बंधित सुरक्षा तैयारियों को भी सुझाया गया है।

5) India's National Security: A Maritime Security Perspective Dr Suresh R.(2020)

भारत की समुद्री सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में लिखी गयी यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें बाहरी शक्तियों का सामना करने की भारत की समुद्री सुरक्षा और हिन्द महासागरीय नीति का उल्लेख किया गया है। इसमें छोटे द्वीपीय देशों की सामरिक सुरक्षा का भी जिक्र किया गया है। इसमें समुद्री सुरक्षा हेतु नयी संस्थागत संरचनाओं की भी तलाश की गयी है। इसमें हिन्द महासागर में भारत और चीन की बीच प्रतिस्पर्धा की विकास को भी समझाया गया है। साथ ही

Arun

समुद्री सुरक्षा हेतु भारत की सैन्य तैयारियों का भी बताया गया है।

6) The Imperative of Political Navigation—India's Strategy in the Indian Ocean and the Logic of Indo-U.S. Strategic Partnership, Yogesh Joshi (2022)

इस लेख के अंतर्गत हिंद महासागर क्षेत्र में महा शक्तियों की उपस्थिति और भारत-अमेरिका की भूमिका, भारत की भू-राजनीतिक रणनीति के विषय में बताया गया है और साथ ही भारत के विदेश नीति के रणनीतिक समुदाय की अपेक्षाओं और देश की विदेश और राष्ट्रीय-सुरक्षा नीतियों की व्यावहारिक स्तर पर कार्यान्वयन के बीच के अंतर को भी दर्शाया गया है।

7) हिन्द महासागर में शक्ति स्पर्धा का भू राजनिक विश्लेषण भारत के विशेष सन्दर्भ मे, अजीत कुमार मिश्रा(2002)

प्रस्तुत शोध हिंद महासागर के सुरक्षा की दृष्टि से जटिल और केंद्रीय महत्व के एक रणनीतिक स्थान के रूप में उभरने का विश्लेषण करती है और इसके संभावित भविष्य को भी देखती है। रणनीतिक विषमता के बावजूद भी अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता के साथ भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता अब हिंद महासागर की परिस्थितियों को परिभाषित करने वाले कारक है। साथ ही यह भी बताया गया है की इस नई स्थिति ने मध्यम-शक्तियों को हस्तक्षेप करने का स्थान प्रदान किया है।

8) भारतीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में हिन्द महासागर, दीपशिखा(2009)

इस शोधपत्र में हिन्द महासागर के महत्व को संदर्भित करते हुए इस क्षेत्र की वर्तमान दो सबसे महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों की प्रकृति पर चर्चा की गयी है। एक तरफ जहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके सहयोगी राष्ट्र हैं जो कुछ प्रमुख रणनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए हिंद

Arun

महासागर में अपनी उपस्थिति और प्रभाव को बनाए रखने के लिए प्रयासरत हैं तो वहीं दूसरी ओर चीन, ईरान, पाकिस्तान और रूस, अमेरिका के नेतृत्व वाले गठबंधन से किसी भी खतरे का मुकाबला करने हेतु अपनी क्षमता बढ़ाकर अपनी क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा को मजबूत करता चाहते हैं।

9) Non-Traditional maritime security threats in the Indian Ocean Region: Policy alternatives, RS Aswani(2022)

इस शोधपत्र के माध्यम से हिन्द महासागर के महत्वपूर्ण संचार मार्गों एवं इसकी भू-रणनीतिक महत्ता की जानकारी प्राप्त होती है और साथ ही इसमें वैश्विक भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता से उत्पन्न परम्परागत सैन्य खतरों से परे कुछ अन्य महत्वपूर्ण समुद्री सुरक्षा चिंताओं को उजागर किया गया है। जैसे कि समुद्र के स्तर में वृद्धि, समुद्र में अम्लीकरण और अनियमित मछली पकड़ना जो न केवल पर्यावरणीय खतरे हैं, बल्कि सुरक्षा खतरे भी हैं। जिन्हें सामूहिक रूप से गैर-पारंपरिक समुद्री सुरक्षा खतरों के रूप में कहा जाता है। ये खतरे उच्च दर पर बढ़ रहे हैं और संभवतः इस लापरवाही के परिणामस्वरूप तबाही होगी जो न केवल हिंद महासागर के देशों की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी।

10) China-India Relations Contemporary Dynamics By Amardeep Athwal(2009)

यह पुस्तक चीन और भारत के बीच आधुनिक संबंधों की गतिशीलता की जांच करती है। अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में प्रमुख उभरती शक्तियों के रूप में, भारत और विशेष रूप से चीन ने समस्त विश्व का ध्यान आकर्षित किया है। हालांकि, चीन-भारतीय संबंधों का अध्ययन करने वाले अधिकांश विश्लेषकों ने एक नव-यथार्थवादी नज़रिये से इसे देखा है जो समग्र संबंध के भीतर संघर्षपूर्ण और प्रतिस्पर्धी तत्वों पर ही जोर देता है। जिससे यह स्पष्ट करना कठिन हो जाता है कि वर्तमान में चीन-भारत संबंध में गुणात्मक बदलाव भी हुए हैं।

Arun

11) **Pirates, Drugs and Navies Why the Western Indian Ocean Needs a New Security Architecture ,Christian Bueger & Jan Stockbruegger(2016)**

इस पत्र में पश्चिमी हिन्द महासागर में समुद्री लुटेरों, नशीले पदार्थों की तस्करी जैसी अवैध गतिविधियों और इसे रोकने हेतु विभिन्न देशों की नौसेनाओं के प्रयासों को बताया गया है।

12) **The Political and Economic Significance of Indian Ocean: An Analysis, Asma Jamshed (A Research Journal of South Asian Studies Vol. 30, No.2, July–December 2015, pp. 73 – 89)**

इस पत्र से हमें हिन्द महासागर की महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों की जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही हिन्द महासागर की सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण चोक पॉइंट्स की जानकारी प्राप्त होती है, जिनसे होकर विश्व की ज्यादातर व्यापारिक जहाज गुजरतें हैं।

13) **Three regional conflicts and super power presence in the Indian Ocean(2011)**

इस शोधपत्र में हिन्द महासागर को एक शक्ति प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र के रूप में दिखाया गया है। इसमें हिन्द महासागर के तटीय देशो के मध्य तीन बड़े संघर्षों को दिखाया गया है। पहला भारत-पाकिस्तान युद्ध(1971), दूसरा ओगाडेन युद्ध(1977-78) और तीसरा ईरान-इराक युद्ध(1980 -88)

Arun

विस्तृत वर्णात्मक क्षेत्र(Description Broad Area)

- हिन्द महासागर की भौगोलिक एवं सामरिक महत्ता
- भारत की समुद्री सुरक्षा
- चीन की 'String of Pearls' नीति और भारत के लिए उसका प्रभाव
- मलक्का जलडमरूमध्य और अन्य सामरिक chokepoints की स्थिति
- क्षेत्रीय व वैश्विक शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा
- समुद्री आतंकवाद, समुद्री डकैती और अवैध गतिविधियाँ
- भारत की रणनीतिक पहलें: SAGAR, क्वाड, IORA, नौसेना आधुनिकीकरण आदि
- अंडमान-निकोबार एवं अन्य द्वीपों की रणनीतिक भूमिका

शोध उद्देश्य(Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत हमारा उद्देश्य हिंद महासागर में भारत के आर्थिक व सामरिक हितों को देखते हुए इस क्षेत्र में भारत की भूमिका को सुनिश्चित करना है जिसके अंतर्गत निम्नलिखित बिन्दू सम्मिलित हैं:-

- हिंद महासागर क्षेत्र में समकालीन रणनीतिक और राजनीतिक वातावरण व महत्व को समझना।
- उन कारकों का अध्ययन करना जो हिंद महासागर को 21 वीं सदी में भू-राजनीतिक हॉटस्पॉट बनाते हैं।
- चीन की हिंद महासागर में भारत को तीन ओर से घेंरने की नीति 'String of Pearls' का हल निकालना।

Arun

- हिंद महासागर में स्थित भारत के द्वीपों की सुरक्षा, साथ ही उनका भू-सामरिक प्रयोग करने हेतु नई संभावनाओं की तलाश करना।
- भारत की मेरीटाइम सुरक्षा नीति को प्रभावी बनाना।
- चीन ने भारत के पड़ोसी देशों में जो भी बंदरगाह विकसित किए हैं उनका भारत के विरुद्ध सैन्य प्रयोग होने से रोकना ।
- हिंद प्रशांत क्षेत्र में स्थित चीन के अन्य प्रतिद्वन्दीयों जैसे- जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया व अमेरीका के साथ मिलकर चीन को घेरने हेतु सहकारी रूप में कार्य करने का ब्लू प्रिंट तैयार करना ।
- इसका उद्देश्य आर्थिक समृद्धि के लिए अंतर-राज्यीय सहयोग की क्षमता को बढ़ावा देना है।
- हिंद महासागर में नौवहन की स्वतंत्रता को बनाए रखना।

शोध प्रविधि(Research Methodology)

- ऐतिहासिक केस अध्ययन पद्धति
- तुलनात्मक विश्लेषणात्मक पद्धति
- सरकारी और अंतरसरकारी दस्तावेज़ों को शोध में द्वितीयक डेटा के रूप में प्रयोग किया जायेगा।
- पुस्तकें,पत्र-पत्रिकाओं, रिपोर्ट और समाचार पत्रों को शोध में द्वितीयक डेटा के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

Arun

संभावित निष्कर्ष (Expected Outcome of the Research)

जैसाकि हम जानते हैं की भारत हिंद महासागर में केन्द्रीय स्थिति रखता है और भारत के लिए हिंद महासागर का अत्यधिक महत्व है अतः इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन के महत्व को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है :-

- इस शोध अध्ययन से हमें 21वीं शताब्दी में भारत और अन्य देशों के लिए हिंद महासागर का महत्व समझने में सहायता प्राप्त होगी।
- इस अध्ययन से हमें हमें भू-राजनीति और राष्ट्रीय हितों की गतिशील प्रकृति की जानकारी प्राप्त होगी।
- इससे हमें हिन्द महासागर की राजनीति एवं महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा की जानकारी प्राप्त होगी।
- इस अध्ययन से हमें इस क्षेत्र में भारत के समक्ष उत्पन्न आर्थिक एवं सामरिक चुनौतियों की जानकारी प्राप्त होगी।
- इस शोध अध्ययन से हमें हिन्द महासागर के तटीय पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को सुधारने में सहायता प्राप्त होगी। जिससे दोनों सहकारी रूप से कार्य कर सकें।
- इस शोध से हमें यह भी जानकारी प्राप्त होगी की भारत इस क्षेत्र में अपने हितों का संतुलन कैसे स्थापित करे।
- इस अध्ययन से हमें इस क्षेत्र में भारत की सुरक्षा तैयारियों की जानकारी प्राप्त होगी।
- इससे हमें हिन्द महासागरीय क्षेत्र में शक्ति संतुलन भी स्थापित करने में सहायता प्राप्त होगी।
- इस अध्ययन से हमें इस क्षेत्र में विद्यमान गैर परम्परागत खतरों की जानकारी एवं उनके निवारण में सहायता प्राप्त होगी।

अतः उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर हमें हिन्द महासागर में भारत की भूमिका निर्धारित करने में सहायता प्राप्त होगी।

Arun

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

- Samudra Manthan : Sino-Indian Rivalry in the Indo-Pacific(CRaja Mohan), Oxford University Press, New Delhi, 2012
- Bharat Ki Videsh Niti, 5/e (Leslie K Kumar, Lipakshi Arora, V N Khanna) , Vikas Publishing House, New Delhi 2014
- International Relatioins in the 21st 6e(Pushpesh Pant), McGraw Hill (India) Private Limited 2021
- International Relations(B.L. Fadia) Sahitya Bahwan Publications, Agra 2020
- International Relations (English, Paperback, Singh Pavneet) McGraw Hill (India) Private Limited 2021
- India's National Security: A Maritime Security Perspective (Dr Suresh R.) VIJ Books (India) Pty Ltd 2020
- Ocean Warfare: The Technology Waves Hardcover(A S Pillai, R K Tewari) Manas Publication 2005
- India and the Indian Ocean: An Essay on the influence of Sea Power on Indian History(K M Panikkar) Life Span Publishers 2019

सरकारी रिपोर्टः-

- Indian Council of World Affairs, Reports
- Ministry of Defence, Annual Reports, Govt. of India
- Press Information Bureau, India

Arun

- Ministry of External Affairs, Annual Reports, Govt. of India
- Niti Aayog, Reports

पत्र-पत्रिकाएं:-

- The Hindu Editorial
- India Today Magzine
- Indian Defence Review
- Indo Pacific Defense Forum
- Indian Foreign Affairs Journal

Arun

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Submission Information

Author Name	Arun Kumar
Title	Vartmaan Bhartiya Pariprekshya Mein Hind Mahasagar Kshetra Ki Bhu-samrik Chunaotiyon Ka Vishleshnatmak Adhyayan
Paper/Submission ID	3612975
Submitted by	santoshauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-14 15:40:18
Total Pages, Total Words	16, 2264
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **6 %**

Sources Type

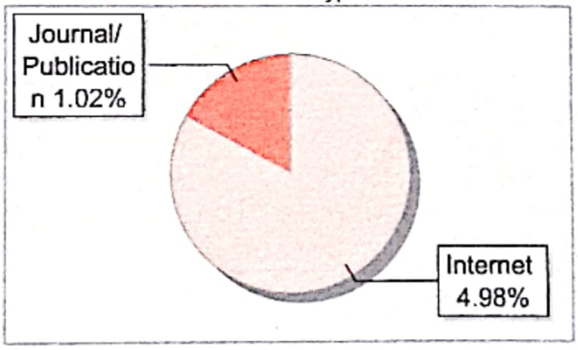

Report Content

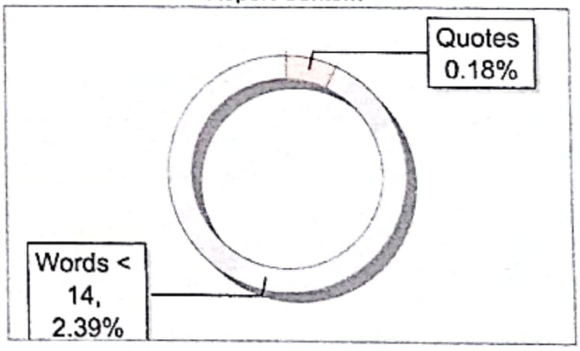

Exclude Information

Quotes	Not Excluded
References/Bibliography	Not Excluded
Source: Excluded < 14 Words	Not Excluded
Excluded Source	0 %
Excluded Phrases	Not Excluded

Database Selection

Language	Non-English
Student Papers	Yes
Journals & publishers	Yes
Internet or Web	Yes
Institution Repository	Yes

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

6	9	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	pdfcookie.com	1	Internet Data
2	translate.google.com	1	Internet Data
3	www.slideshare.net	1	Internet Data
4	pdfcoffee.com	1	Internet Data
5	hindupost.in	1	Internet Data
6	14.139.60.153	1	Publication
7	moam.info	<1	Internet Data
8	redcol.minciencias.gov.co	<1	Publication
9	www.studocu.com	<1	Internet Data

Arun